Table of Content

Sr. no.	Title of the paper	Page no.
1	हिंदी दलित साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्या के संदर्भ में - प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर	01 – 05
2	राही मासूम रजा के उपन्यासो में मुस्लिम जीवन - प्रो. डॉ. नाजिम शेख	06 – 08
3	२१वीं सदी की कहानी साहित्य में हाशिए का समाज (नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में चित्रित नारी की समस्याओं के विशेष संदर्भ में) - श्री. नीलेश वसंतराव जाधव	09 – 13
4	कमलेश्वर के 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास में मानवीय चेतना - प्रा. डॉ. सौ. वाघ शकुंतला प्रताप	14 – 17
5	भारतीय साहित्य के परिदृश्य में दलित स्त्री का सम्यकांक्षी स्वर - प्रा. निवृत्ती ता. लोखंडे	18 – 25
6	२१वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित हाशिए का समाज (किन्नर विमर्श के विशेष संदर्भ में) - प्रोफेसर (डॉ.) प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर	26 – 34
7	संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन की त्रासदी - डॉ. जे. ए. पाटील	35 – 40
8	२१वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित हाशिए का समाज - डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले	41 – 49
9	विद्रोह और संघर्ष को उजागर करती दलित आत्मकथा 'नागफनी' - प्रा. डॉ. स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील	50 – 53
10	२१वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित हाशिए का समाज (किन्नर) - अनिता कुमारी	54 – 60
11	'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श - प्रा. रोहिणी गुरुलिंग खंदारे	61 – 65
12	'पंचकन्या' उपन्यास में वर्णित घुमंतू समाज - प्रो. (डॉ.) सुपर्णा संसुद्धी	66 – 68

13	हिंदी कविता में आदिवासी स्त्री चेतना के स्वर - प्रा. डॉ. आरिफ शौकत महात	69 – 78
14	महिलाओं की आत्मकथाओं में अभिव्यक्त हाशिए का समाज - नम्रता नितिन काडगे	79 – 83
15	२१वीं सदी के भारतीय भाषाओं से अनूदित हिंदी काव्य में चित्रित हाशिए का समाज - डॉ. सूरज बाळासो चौगुले	84 – 89
16	ज्योत्स्ना मिलन की लोकप्रिय़ कहानिय़ों में चित्रित उपेक्षित नारी पात्र - कुमारी शकुंतला दशरथ कुंभार	90 – 93
17	'धूणी तपे तीर' में चित्रित हाशिए का समाज - वर्षा गजानन पाटील	94 – 97
18	२१वीं सदी के उपन्यास में हाशिए का समाज 'मुक्तिपर्व' उपन्यास के विशेष संदर्भ में - मनीषा दीपक केळूसकर; प्रो. डॉ. सुनील बनसोडे	98 – 101
19	आधुनिक हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श (चित्रा मुदगल के 'गिलिगडु' उपन्यास के संदर्भ में) - सुश्री: श्रीदेवी भवन वाघमारे	102 – 106
20	'पिछले पन्ने की औरतें' उपन्यास में व्यक्त बेड़िया समुदाय की स्त्रियोंकी व्यथा - डॉ. चंद्रकांत यादु बंडेवार	107 – 110
21	अलका सरावगी के कोई बात नहीं उपन्यास में दिव्यांग विमर्श - जयश्री पांडुरंग चव्हाण	111 – 116
22	आदिवासी समाज की स्थिति तथा हिंदी उपन्यास - प्रा. डॉ. अजयकुमार कृष्णा कांबळे	117 – 120
23	२१वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित हाशिए का समाज (वृद्ध विमर्श के विशेष संदर्भ में) - डॉ. नितीन हिंदुराव कुंभार	121 – 124
24	आदिवासी हिंदी कहनी में चित्रित घुमंतू जीवन - प्रा. निलेश सखाराम डामसे	125 – 129

25	नारी संघर्ष की यशोगाथा – 'शिकंजे का दर्द' - प्रा. अश्विनी जगदीप थोरात	130 – 137
26	२१वीं सदी के हिंदी काव्य में चित्रित हाशिए का समाज - प्रा. कविता तुकाराम चानकने	138 – 143
27	२१वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित हाशिए का समाज (आदिवासी समाज के विशेष संदर्भ में) - प्रा. डॉ. जितेंद्र वामन बनसोडे	144 – 148
28	जयप्रकाश कर्दम के 'दुनिया के बाजार में' कविता संग्रह में चित्रित हाशिए का समाज - प्रशांत विलास सत्यश	149 – 155
29	हाशिए के दर्द में झुलसता 'हीरालाल' - डॉ. विकास विलासराव पाटील	156 – 158
30	'दरिद्र देवो भव' - स्वामी विवेकानंद के मानवतावादी विचारों की प्रासंगिकता (नरेंद्र कोहली और राजेन्द्रमोहन भटनागर के उपन्यासों के संदर्भ में) - प्रा. सुधाकर इंडी	159 – 164
31	२१वीं सदी की हिंदी कविताओं में चित्रित सामाजिक जीवन - प्रो. डॉ. रामचंद्र मारुती लोंढे	165 – 170
32	हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श - डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद	171 – 175
33	इक्कीसवीं सदीं के हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श - प्रा. विरभद्र बिरादार	176 – 180
34	२१वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित आदिवासी - प्रा. डॉ. अशोक मरळे	181 – 185
35	हिंदी आत्मकथाओं में चित्रित दलितों के जीवन के संदर्भ में - प्रा. डॉ. भिंगारदेवे लीला रामचंद्र	186 – 190
36	दिविक रमेश की बाल कविताओं में चित्रित हाशिए का समाज - प्रा. शहिदा नजीर अत्तार	191 – 195

37	२१वीं सदी के उपन्यासों में चित्रित हाशिए का समाज (यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के 'बहुरुपिया' उपन्यास के संदर्भ में) - प्रा. डॉ. मीनाक्षी विनायक कुरणे	196 – 201
38	दलित आत्मकथाओं में चित्रित हाशिए के समाज की समस्याए - प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत	202 – 206
39	२१वीं सदी के उपन्यासों में चित्रित हाशिए का समाज - प्रोफेसर (डॉ.) विनायक बापु कुरणे	207 – 211
40	हाशिय पर समाज का दर्द : तीसरी ताली - प्रा. डॉ. सरिता बाबासाहेब बिडकर	212 – 216
41	'जलती रहे मशाल' कविता संग्रह में चित्रित हाशिए का समाज - प्रा. डॉ. कृष्णात आनंदराव पाटील	217 – 220
42	असगर वजाहत के 'मैं हिंदू हूँ' में चित्रित हाशिए का समाज - प्रा. शैलजा पांडुरंग टिळे	221 – 225
43	२१वीं सदी के हिंदी काव्य में चित्रित हाशिए का समाज : दलित विमर्श - जितेश्वरी साहू	226 – 233
44	ग्लोबल गाँव के देवता : आदिवासी विमर्श - प्रा. डॉ. शोभा एम्. पवार	234 – 238
45	२१वीं सदी के हिंदी आत्मकथा में चित्रित हाशिए का दलित समाज (सुशीला टाकभौरे के 'शिकंजे का दर्द' के विशेष संदर्भ में) - प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे	239 – 243
46	हाशिए पर की सोमा बुआ - प्रा डॉ शंकर दलवी	244 – 247
47	निर्मला पुतुल के काव्य में संवेदना - प्रा. डॉ. भारत उपाध्य	248 – 252
48	इक्कीसवी सदी के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य और उपेक्षित समाज - प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे	253 – 259
49	'जूठन' आत्मकथा में अभिव्यक्त हाशिए का समाज - सुनिता कांबळे	260 – 264

50	२१वीं सदी के हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित किन्नर विमर्श - प्रा. मारुफ मुजावर	265 – 269
51	विपिन बिहारी के उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन - कोमल अरविंद फटांगरे	270 – 273
52	२१वीं सदी के हिंदी काव्य में चित्रित हाशिए का समाज (प्रातिनिधिक रचनाओं के संदर्भ में) - डॉ. सविता लालासो नाईक निंबालकर	274 – 279
53	२१वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित हाशिए का समाज (भगवानदास मोरवाल कृत 'काला पहाड़' के विशेष संदर्भ में) - प्रा. डॉ. गोरखनाथ किर्दत	280 – 283
54	'डांग' उपन्यास दस्यु जीवन का दस्तावेज - प्रा. डॉ. गजानन चव्हाण	284 – 288
55	निर्मला पुतुल का काव्य : हाशिए के रूप में आदिवासी स्त्री - प्रो. डॉ. सुनील बापू बनसोडे	289 – 292
56	'काला पादरी' में चित्रित हाशिए का समाज (आदिवासी विमर्श के संदर्भ में) - मलिका शाकुर पकाली; प्रो. डॉ. सुनील बापू बनसोडे	293 – 297
57	‘‘थर्ड जेंडर की कहानियाँ” में चित्रित हाशिए का समाज (किन्नर समाज के संदर्भ में) - अनुताई नागनाथ झोंबाडे; प्रो. डॉ. सुनील बापू बनसोडे	298 – 301
58	डॉ. युवराज सोनटक्के के कविता संग्रह अग्निध्वजा में शोषित वर्ग का चित्रण - प्रा. डॉ. गोरख निळोबा बनसोडे	302 – 310
59	हरिराम मीणा के 'धूणी तपे तीर' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समाज - प्रा. डॉ. हेमलता काटे	311 – 314
60	२१वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जन-जीवन (प्रातिनिधिक उपन्यासों के संदर्भ में) - प्रो. डॉ. नितीन धवडे; प्रा. संजय जाधव	315 – 320
61	सांस्कृतिक अर्थशास्त्र : एक अध्ययन - अकांक्षा दुबे	321 – 326

62	Moral Values and Ethics: A Reflection in Children's Literature - Mrs. Varsha Vaibhav Patil	327 – 330
63	Translation as Mirror Image in Silence! The Court Is In Session - Ms. Snehalata Suryakant Kadam	331 – 335
64	Stock Exchanges - An Overview - Dr. Gopal Vishnudas Somani	336 – 338